## दिनांक 4 नवम्बर, 1987

स॰ भो॰ वि॰/पानी/ 120-87/43535.-- चं कि हरियाणां के राज्यपाल की राय है कि मैनेजिंग डायरेक्टर, दी करनाल सैन्ट्रल को-भोन्नेटिय बैंक लि॰, दी माल, करनाल के श्रमिक श्री जसबीर सिंह, पृक्ष श्री राम संख्य, गांव गोगडीपुर, सहसील करनाल, जिला करनाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भोदांगिक विचाद है;

भीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद का न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, प्रव, घौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई भिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी घिष्ठसूचना संव 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रंभैल, 1984 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के ग्रंधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त माभला है या विवाद से सुसंगत भयवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री जसबीर सिंह की सेवाओं का समग्पन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं बो बि | पानी | 122-87 | 43542 -- नृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैनेजिय डायरेंक्टर, दी करनाल सैन्ट्रल को-मोप्रेंटिव देक लि ब, दी माल, करनाल के श्रमिक श्री सुदर्शन कुमार, पृत्न श्री जय नारायण, गांव महमदपुर, जिला करनाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

धौर चंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना संव 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन विश्वत श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादशस्त या उससे सम्बन्धित नीचे विखा सम्बन्धा न्यायविणंट एमं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विश्वाद से मुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला हैं :---

> वया श्री सुदर्शन क्मार की सेवाओं का समापन न्यायोधित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं को विव/पानी/123-87/43549.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैनेजिंग डायरेक्टर, की करनाल सैन्ट्रल को-मोर्पेटिव वैक लिंक, दी माल, करनाल के श्रीमक श्री सेठपाल रावल, गांव ढाटुला, डा॰ पसीनाकलां, तहसील पानीपत, जिला करनाल तथा उसके प्रकथकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई मौद्योगिक विवाद है;

स्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हैत निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, भव, भी छोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना संव 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 प्रारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम, न्यायालय, प्रम्वाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हैतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद है सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

कथा श्री सेटपाल रावल की सेवाओं का समापन न्तायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

रं॰ भो॰ वि॰ (पानी / ) : 7-87 / 43556. - पूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैनेजिंग डायरेक्टर, दी करनाल सैन्द्रल को-भ्रोप्रेटिव बैक लि॰, दी माल, करनाल के श्रमिक श्री मोहिन्द्र पाल सिंह, पुत्र श्री अमर सिंह, गांव व डा॰ कोहन्द, तहसील व जिला करनाल सथा जसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है; भीर चुं कि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, मोद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (म) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984, द्वारा उक्त ग्रिबिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित अन न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला हैं या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री मोहिन्द्रपाल सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठोक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संब्धी विविश्यानी 118-87 43563.-- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैनेबिंग डायरेक्टर, दी करनाल सैन्ट्रल को-कोपेटिव वैंक लिए, दो नाल, करनाल, के श्रीनिक श्री दनशेर सिंह, पृत्र श्री हरि तिह, गांव हमनपुर, डाकबाना फरलक, जिला करनाल तथा उसके प्रवाधकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मानने में कोई घोडींगिक विदाद है;

भौर वृंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेनु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौकोनिक विवाद अधितियम, 1947 को बारा 19 की छपकारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सिल्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्य गांच इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अविनियम की धारा 7 के बंबीच गठित अन न्यायालय, अभ्याना को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित निचि तिया मामला न्यायितियय एवं पंचाट 3 मान में देते हेतू निर्देश्य करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा अपिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अपदा सम्बन्धित मामला है: —

क्या श्री दलबीर सिंह की सेवाग्रों कः समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किप राह्त का हकदार है ?

सं० मो० वि०/पानी/119-87/43570.—चूंकि हरियाणा के राज्यसल को राय है कि मैनेजिंग उत्यरेक्टर, दी करनाल सैंद्रल को-सोब्रेटिव बैंक लि०, दो मान, करन'न, के श्रीमक श्री दया किणन, पृत्र श्री हरो दत्त, एक्म सेवादार, शिव कालोनी, करनाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखिल मामले में कोई श्रीबोक्कि विवाद है:

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायिवर्षय हेत् निर्दिश्ट करना बाउनीय समझते हैं;

इलिलए, मब, ब्रोड्योगिक विवाद ब्रिक्षेनियम, 1947 की बारा 19 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस है हारा सरकारी अधिसूचना सं 3 3(44) 84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, हारा उक्त ब्रिधिनियम की खारा 7 के ब्रिधीन गिलत अब न्यायालय, ब्रम्बाला, को धिबादप्रस्त या कलसे सञ्चनिव्य नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में बेने हेतु निर्दिष्ट बरते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो निवादब्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री दया किणन की मैंबाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि तहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० मो० बि०/पानी/124-87/43577. --ब्र्ंकि द्रिशामा के राज्यात की राम है कि मैनेजिंग डायरेक्टर, दी पानीपत महकारी ग्वर किन ति०, गांवा डिस्टनरी ग्रीट, पानीपत, के श्रीमिक श्री रूप जन्द, पृत श्री छोटू, गांव व डाकखाना इसराना, तहसील पानीपत, जिला करनाल तथा उसके प्रकार को के मध्य इसमें इसके बाद बिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियागा है राज्यात इस विवाद को न्यायतिर्गय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय पमतने हैं ;

इसिनिये, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम. 1947 की धारी 10 की उपवार (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिमूचना सं 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उनन प्रतिनियम का बारा 7 के अधीन गिज श्रम न्यायालय, अम्बाना की विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन माल में देने हेतु निर्देश्य करते हैं जो कि उनन प्रवश्यकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है अथवा विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :——

क्या श्री रूप जन्द की सेवायो का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो बह किस राहत का हुकदार है ?